तक गाड़ी से पहुंचा दिया। मैंने यह लिखकर दे दिया कि मेरा इस आदेश का पालन करने का कोई इरादा नहीं है और जांच समाप्त होने तक मैं चम्पारन से नहीं जाऊंगा। इस पर मुझे सम्मन मिला कि चम्पारन छोड़ने के आदेश का पालन न करने के लिए मैं अदालत में हाज़री दूं। मैं चाहता था कि (अदालत में) मैं चम्पारन छोड़ने के आदेश की अवहेलना करने का अपराध कबूल करूंगा। मगर अदालत में हाज़िर होकर सज़ा सुनने से पहले ही मजिस्ट्रेट ने मुझे एक लिखित संदेश भेजा कि लेफ्टीनेंट गवर्नर ने आदेश दिया है कि मेरे खिलाफ मुकदमा वापिस ले लिया जाए। कलेक्टर ने मुझे लिखा कि मैं अपनी जांच का काम करने को स्वतंत्र हूं और मैं सरकारी अधिकारियों से भी मदद ले सकता हूं। इस प्रकार से देश को सविनय अवज्ञा का पहला प्रत्यक्ष अनुभव मिला।"

तो, जर्मनी की बी.ए.एस.एफ. प्रयोगशाला में संयोग से टूटे एक थर्मामीटर ने सस्ते कृत्रिम नील का मार्ग प्रशस्त किया, जिसकी वजह से बंगाल व बिहार के लाखों लोग अपनी जीविका व आमदनी से हाथ धो बैठे। इससे उत्पन्न हुए कष्ट ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन को जन्म दिया। ***(स्रोत फीचर्स)***

एक बिच्छू दो ज़हर

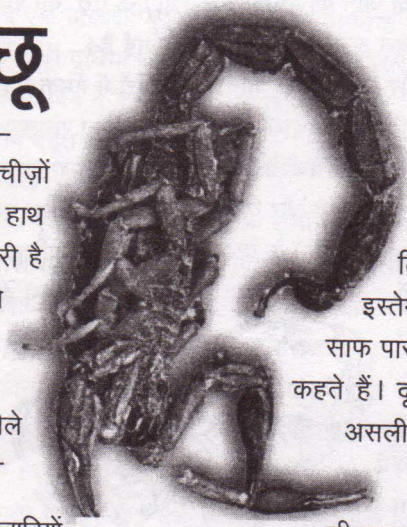

दरअसल बिच्छू की कामयाबी में दो चीज़ों का बड़ा हाथ है। पहली है शिकारी के हाथ से बच निकलने की क्षमता और दूसरी है अपने शिकार को पकड़कर पचा जाने का कौशल।

इस प्रक्रिया में बिच्छू की यह क्षमता बहुत अहम है कि वह अपने बेहद ज़हरीले विष को बनाने और उगलने का काम अपनी पूंछ के डंक से करता है। इसके लिए वह वास्तव में दो तरह के विष का इस्तेमाल करता है। पहले दंश में वह एक साफ पारदर्शी तरल छोड़ता है जिसे पूर्व-विष कहते हैं। दूसरे दंश में दूधिया द्रव के रूप में असली विष छोड़ता है।

डॉ. बालसुब्रमण्यन

कीटों और रेंगने वाले कीड़ों की लाखों प्रजातियों में एक बिच्छू आदिकाल से इंसान की रुचि का विषय रहा है। इतना ही नहीं इसे राशियों में स्थान देकर आकाश में भी विराजमान कर दिया गया है। मिस्र में इसे देवी सर्केट माना गया है। खजुराहो के हिन्दू मंदिर जिस जगह पर बने हैं वहां के लोगों को 'खरजुरा वाहक' या बिच्छू धारक कहा जाता था। हैदराबाद के फलकनुमा महल का आकार बिच्छू सरीखा है। अभी हाल में एक गाड़ी को स्कॉर्पिओ (यानी बिच्छू) नाम दिया गया है। यानी इस रेंगते प्राणी को हमने जगुआर, मुस्टांग (जंगली घोड़ा), कोल्ट (घोड़े का बच्चा), गज़ेल (हिरन) और फाल्कन (बाज़) की जमात में शामिल कर लिया है। गौरतलब है कि ये सभी अपनी तेज़ गति और तत्काल एक्शन के लिए जाने जाते हैं।

बिच्छू को इस तरह चने के झाड़ पर चढ़ाना भ्रामक है। वास्तव में यह जगुआर की बजाए एम्बैसेडर कार के ज़्यादा करीब है। कई अन्य कीट बिच्छू से सैकड़ों गुना ज़्यादा तेज़ हैं। बिच्छू की 1250 प्रजातियों में से एक भी अपनी गति के लिए नहीं जानी जाती। फुर्ती में इस कमी की भरपाई ये लचीलेपन और जीने की अन्य रणनीतियों के ज़रिए करते हैं। बिच्छू थार और सहारा रेगिस्तानों से लेकर केरल और ब्राज़ील के वर्षा वनों तक में पाए जाते हैं।